# तृतीय अध्याय

# मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : दलित चेतना

# तृतीय अध्याय

## *"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : दलित चेतना"*

### 3.1. प्रस्तावना :

आधुनिक काल के साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि का चित्रण हो रहा है | इसके साथ-साथ शोषित, दलित और स्त्री-विमर्श को भी विषय बनाया जा रहा है | दलित साहित्य सामाजिक नवनिर्माण की अपेक्षा रखता है | शाहू, फुले, डॉ.अम्बेड़कर जैसे महापुरूषों के कार्य के परिणामस्वरूप दलितों के जीवन में परिवर्तन होने लगा है | दलित समाज संगठित होकर अपने अधिकारों की माँग करने लगा है | अत: सामंतवादी, पूँजीवादी, सवर्णो, हिंदू समाज व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करने लगा है |[1]

भारत में प्राचीन काल से समाज व्यवस्था चार्तुवर्ण व्यवस्था में बटी है | उसमें क्षूद्रों के प्रति शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार, घृणास्पद व्यवहार रहा है | भारत में सनातन एवं धार्मिक प्रवृत्ति अधिक रही है | प्राचीन काल से सामाजिकता के आघात सहन करते हुए दलित अपना जीवन जी रहा है | इस चार्तुवर्ण व्यवस्था ने ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य ने दलितों पर अमानवीय अन्याय और अत्याचार किए हैं | अमानवीय अत्याचार, पशुतुल्य जीवन और बहिष्कृत जीवन जीनेवाला दलित, शोषित, पीड़ित आज सामाजिक क्रांति की राह पर चल रहा है | आजादी के आंदोलन में राष्ट्रीय एकता के साथ बंधुता, सामाजिकता पर बल दिया गया था | स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय संविधान ने दलितों के लिए प्रावधान का प्रबंध किया गया | शाहू, फुले, डॉ.अम्बेड़कर, गांधी आदि महापुरूषों ने दलितों की खोई अस्मिता को पाने के लिए दलितों को चेतित करने का प्रयास किया[2] | इस परिवर्तन से साहित्य और साहित्यकार भी प्रभावित हो उठे | इसी कारण आज के साहित्य में दलित चेतना का चित्रण तीव्र रूप से दिखाई देता है |

### 3.1.1. दलित : परिभाषा

आजकल 'दलित' शब्द को लेकर साहित्य क्षेत्र में काफी चर्चा चल रही है | जो दबाया गया हो अथवा जिसे पनपने या बढ़ने न दिया हो वही दलित है | दलित, शोषितों की कहानी उतनी प्राचीन है, जितनी भारतीय संस्कृति है | हिंदू संस्कृति के प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भी दलित शब्द का उल्लेख मिलता है |

**दलित शब्द की व्यापक परिभाषा :**

1. दलित विमर्श के प्रख्यात लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार - "दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित आदि |"[१]
2. कंवल भारती के अनुसार - "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है, जिसे कठोर और गंधे कार्य के लिए बाध्य किया गया है |"[२]
3. डॉ.तेजसिंह के अनुसार - "वर्तनान पंचायती राज का लोकतांत्रिक स्वरूप जातिवादी ही है | लोकतंत्र आज भी सवर्ण समाज के हाथों में दलितों के शोषण और अत्याचारों का एक हथियार बना हुआ है |"[३]

### 3.1.2. चेतना शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ :

चेतना शब्द का प्रयोग साहित्य, दर्शन और मनोविज्ञान में मिलता है | चेतना का संबंध मानव की आंतरिक शक्ति 'चित' से है | चेतना एक ऐसी प्रवृत्ति है जो जीवन को उत्तेजीत करती है, चेतित करती है | चेतना का अर्थ जीवन में मिलनेवाली प्रेरणा से है | वह एक ऐसी प्रेरणा, शक्ति एवं ताकत है जो अन्याय का विरोध करती है | वह अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए विद्रोह करती है | भिन्न-भिन्न शब्दकोशों में 'चेतना' शब्द का अर्थ इस प्रकार है -

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ क्र. 13
2. संपादक - वीरेंद्र नारायण यादव - हिंदी अनुशीलन, अंक -4-5, अक्तूबर-मार्च (संयुक्तांक) 2005-2006, पृष्ठ क्र.130
3. वही - पृष्ठ क्र.132

1. 'समांतर कोश हिंदी थिसारस' में चेतना शब्द का अर्थ इस प्रकार है - "अनुभूति - एहसास, चेतना; आंतरिक ज्ञान; होश आना, चेतना आना; जागना-उठना |"[१]
2. 'मानक हिंदी कोश' के दूसरे खंड में - "चेतना - मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीवन या प्राणी को आंतरिक तत्वों या बातों का अनुभव या आन होता है; बुद्धि, समझ; मनोवृत्ति; याद, स्मृति |"[२]
3. 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में चेतना शब्द का अर्थ है - "बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, चेतनता, होश |"[३]

### 3.1.3. चेतना : परिभाषा

मनुष्य चेतना प्रधान प्राणी है | विद्वानों ने चेतना को प्रवाह माना है | वह सदैव गतिशील एवं निरंतर परिवर्तनशील है | चेतना मूलत: अखंड है | चेतना में बुद्धि की अपेक्षा अनुभूति को प्रधानता रहती है | विषय को अधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिए 'चेतना' शब्द का अर्थ जान लेना पर्याप्त नहीं है, इसके पारिभाषिक अर्थ को जान लेना आवश्यक है -

1. डॉ.अंबलगे के मतानुसार - "चेतना प्राणी मात्र में निहित वह शक्ति है और इन्हें चैतन्यमय बनाकर सजीव सिद्ध करती है |"[४]
2. 'महादेवी वर्मा' के अनुसार - "मानव में चेतना के अनेक स्तर है, सहचेतना, परचेतना और अवचेतना; वही स्थूल, सूक्ष्म कारक मन से संयुक्त हो एक बड़े साहित्यकार को जन्म देती है | प्रकृति के किस नियम से यह होता है, यह कहना कठिन है |"[५]

---

1. संपा. अरविंदकुमार - समांतर कोश हिंदी थिसारस, पृष्ठ क्र.969
2. संपा.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश (दूसरा खंड), पृष्ठ क्र.274
3. संपा.नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ क्र.388
4. डॉ. अंबलगे - संतों और शिवशरणों के काव्य में सामाजिक चेतना, पृष्ठ क्र.17
5. संपादक महादेवी वर्मा - धर्मयुग, अंक -3, 25 अक्तूबर 1987 पृष्ठ क्र.37

### 3.1.4. चेतना के प्रकार :

चेतना से अभिप्राय है कि - परंपरागत मूल्यों का त्याग करना तथा नवीन मूल्यों का स्वीकार करना | मानवी जीवन जैसे-जैसे विकसित होता गया वैसे-वैसे उसमें चेतना का निर्माण हुआ | वह चेतना निम्नलिखित संदर्भ में दिखाई देती है -

#### 3.1.4.1. सामयिक चेतना :

द्वंद्वात्मक विकासवाद के अनुसार चेतना जागरण का तात्पर्य प्राचीन मूल्यों और निष्ठाओं का संपूर्ण त्याग करना और नवीन मूल्यों का स्वीकार करना है | आज दलितों में सामयिक चेतना का विकास हो रहा है | कुछ विद्वानों का मत है कि समाज परिवर्तन मार्क्सवाद से संभव है और इसके लिए क्रांति की आवश्यकता है | आज दलितों में सामयिक चेतना के कारण व्यक्तिहित की अपेक्षा समाजहित को प्रमुखता दे रहे हैं | आज दलित यह अपेक्षा रखते हैं कि समाजहित की रचना में देश की सरकार पर्याप्त सहयोग दें और स्वयं भेदभाव रहित समाज के परिवर्तन प्रक्रिया में सहयोग देकर समाज और देश की एकता, अखंड़ता को बनाए रखने में अपना योगदान दें | तभी दलितों में चेतना जागरण का कार्य पूर्ण होगा | जब व्यक्ति को बौद्धिक निष्ठा, वैज्ञानिक निष्ठा और परिस्थितियों का ज्ञान होगा तब दलितों में विकास संभव है | सामयिक चेतना द्वारा परंपरागत धर्म का विरोध करके सामाजिक परिवर्तन करने से धर्मनिरपेक्ष और विज्ञान के आधार पर सामाजिक विकास करना संभव है | धर्म के बारे में मार्क्स का उक्त कथन इस तरह से है - धर्म का निर्माण मनुष्य करता है, मनुष्य का निर्माण धर्म नहीं करता | इस विवेचन से धर्म का विरोध करके सामयिक चेतना द्वारा सामाजिक विकास संभव है |

#### 3.1.4.2. सामाजिक चेतना :

भारत में जमींदारी प्रथा से किसानों का शोषण हुआ है | बाल-विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्री-पुरूष समानता आदि को ध्यान में रखकर समाज सुधारकों ने आंदोलन शुरू किया है | जाति-प्रथा के विरोध में भी आंदोलन प्रारंभ हुआ और सामाजिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया जाने लगा है | आज दलित अपना राजकीय अस्तित्व स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं और आर्थिक उन्नति करने में भी सफल हो रहे हैं |

प्राचीन काल से शासन वर्ग ने दलितों का अंधविश्वास, अंधश्रद्धा और छल-कपट से शोषण किया | इसी कारण दलितों की भावनाएँ कुंठित और क्षीण रही | लेकिन आज सामाजिक चेतना से वे अपना अस्तित्व निर्माण कर रहे हैं | समाज में परिवर्तन लाना है तो अपनी स्थितियों, धारणाओं और व्यवहार में परिवर्तन लाना आवश्यक है | समाज प्रबोधन में सबसे बड़ा रोड़ा स्वार्थ है | स्वार्थ से समाज प्रबोधन असंभव हो जाता है | स्वार्थ की प्रवृत्ति का प्रदर्शन पूँजीपतियों में अधिक होता है | स्वार्थ के कारण पूँजीपति, सामंत आदि दलित समाज और मजदूर वर्ग पर अन्याय, अत्याचार करते रहे | लेकिन आज दलित समाज और मजदूर वर्ग अपने ऊपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार से परिचित हो रहा है और अपने अन्याय के खिलाफ संगठित होकर आंदोलन छेड़ रहे हैं यह आंदोलन सामाजिक चेतना का प्रतीक है, जिसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक सरोकारों को अच्छी तरह से समझ चूके हैं |

### 3.1.4.3. राजनीतिक चेतना :

स्वातंत्र्योत्तर काल में साहित्यकारों ने राजनीतिक भ्रष्ट व्यवस्था, स्वार्थी नेताओं पर प्रहार, नेताओं की आयाराम-गयाराम प्रवृत्तियों का पर्दाफाश, नेताओं की कथनी और करनी में अंतर स्पष्ट किया | आज की राजनीति में जातीय भेदाभेद, सांप्रदायिकता, अनुवांशिकता, शहरी और ग्रामीण भेदनीति दिखाई देती है | भारत की राजनीति में सर्वप्रथम राजनीतिक दलों का गठन धार्मिक स्वरूप में हुआ | आज भारत में लोकतांत्रिक सत्ता होने पर भी राजनीति में धर्म का, जाति का अधिक प्रभाव रहा है | इसका नाश करके सामाजिक समता को स्थापित करना चाहिए |

प्राचीन काल से दलितों पर अन्याय, अत्याचार किया जा रहा है | स्वातंत्र्यता के पश्चात भी भारतीय राजनीति में जातिवाद पूर्ण रूप से हावी हो गया है | जाति के नाम पर राजनेता अब चुनाव लड़ रहे हैं | आज जातियता के नाम पर सांप्रदायिक दंगे हो रहे है | जातियता पर राजनीतिक दलों का गठन हो रहा है | अतः स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के पश्चात राजनीति में जातिवाद पूर्ण रूप से हावी हो गया है | लोकतांत्रिक व्यवस्था का सही लाभ आम जनता नहीं ले रही है | राजनीति पर जातिवादिता पूर्ण रूप से छा गयी है | आज इस अंधाधुंद माहौल ने



SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

राजनीतिक व्यवस्था को खोखला कर दिया है | अत: हमें आम जनता में राजनीतिक और सामाजिक चेतना जागृत करके स्वच्छ राजनीति को स्थापित करना चाहिए |

### 3.1.5. दलितोद्धारक :

दलितोद्धारकों ने सामाजिक समता, एकता एवं बंधुता को स्थापित करने का प्रयास किया | जातियता की कठोर दीवारें गिराकर मानवधर्म को स्थापित करने का प्रयास किया | उनमें डॉ. अम्बेड़कर, महात्मा गांधी, महात्मा फुले, गोपालराव हरि देशमुख, गोपाल गणेश आगरकर, महर्षि धोंड़ो केशव कर्वे, महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे, राजर्षि श्री शाहू महाराज आदि प्रमुख हैं | उनमें से महत्वपूर्ण दलितोद्धारकों पर विचार करेंगे |

### 3.1.5.1. डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर जी का कार्य :

प्राचीन काल से दलितों पर अन्याय, अत्याचार होता रहा है | उन्हें बहिष्कृत और अस्पृश्य माना गया है | दलितों का जीवन पशु से बदतर था | उस दलितों में जागरण लाने एवं उसे वाणी देने का कार्य डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर जी ने किया है | इस महान विभूति ने मानवता धर्म को प्रस्थापित करने का प्रयास किया | समता और स्वातंत्र्य के प्रतिपादक तथा दलितों के उद्धारकर्ता के रूप में डॉ. अम्बेड़कर जी का व्यक्तित्व रहा है | डॉ. अम्बेड़कर जी ने प्रथम और दवितीय गोलमेज परिषद में भारतीय दलितों का प्रतिनिधित्व किया और दलितों की माँगे पेश की | कालाराम मंदिर सत्याग्रह, महाड़ सत्याग्रह, रामकुंड़ प्रवेश सत्याग्रह और रामरथ उत्सव विषयक सत्याग्रह आदि से हिंदू समाज व्यवस्था की इट से इट बजा दी एवं हिंदू समाज व्यवस्था की निरर्थकता को यथार्थ नग्न रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया | जो धर्म न्याय नहीं कर सकता उसे त्याग देने का विचार शुरू हुआ | परिणाम्त: सन 1935 ई. में उन्होंने धर्मांतर की ऐतिहासिक घोषणा की | उनसे प्रेरित होकर लाखों लोगों ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया |

डॉ. अम्बेड़कर दलितों के 'मसीहा' थे | उन्होंने दलितों को 'शिक्षित बनो, संगठित हो जाओ और संघर्ष करो' यही मूलमंत्र देकर जागृत और सचेत होने का संदेश दिया | उन्होंने दलितों के हितों की रक्षा करने और सामाजिक उन्नति के साथ समान अधिकारों की प्राप्ति के लिए

कानून का प्रबंध किया | जिसके परिणाम स्वरूप आज दलित सचेत और सजग हो गए हैं | आज दलित, अस्पृश्य, अछूत, निम्नवर्ग को डॉ.अम्बेड़कर जैसी विभूति से प्रेरणा लेकर उनका अधूरा सपना पूरा करना चाहिए और वैभवशाली भारत का निर्माण करना चाहिए |

**3.1.5.2. महात्मा फुले :**

समाजसुधारक और राष्ट्रभक्त महात्मा फुले जी ने महाराष्ट्र में सामाजिक जागरण और सुधारणा में बहुमोल योगदान दिया है | उन्होंने किसान, नारी, दलित आदि के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया | अज्ञान, अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार पर प्रकाश ड़ाला | शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा, नारी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया जिसके कारण दलित एवं नारी भी शिक्षित बनी |

महात्मा फुले ने सामाजिक विषमता को निकटता से देखा था, जाना था, अनुभव किया था | सवर्ण धर्मग्रंथ का आधार लेकर अस्पृश्य, दलित और निम्नवर्ग को लुट रहे थे | उनका उन्होंने तीव्र विरोध किया | उन्होंने आम जनता को न्याय देने के लिए सन् 1873 ई. में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की | उन्होंने हिंदू धर्म में प्रचलित वेद, श्रुति, स्मृति, पुराणोक्त पर प्रहार किया और जातिभेद, धर्मभेद जैसी नीति पर हमला किया | उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' द्वारा दीन-दलितों की रक्षा के लिए प्रयास किया | यह आंदोलन शोषितों, दुर्बलों की विद्रोहमयी चेतना की अभिव्यंजना सिद्ध हो गयी | यह आंदोलन सामाजिक दासतां में जकड़े हुए दलितों के प्रतिकार की आवाज बना | जिसके कारण दलित अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सतर्क हुए | सन 1852 में दलितों के बच्चों के शिक्षा हेतु पुना में एक पाठशाला शुरू की, सन् 1868 में दलितों को पानी भरने के लिए अपने घर का पानी का कुआ खुला किया |

उन्होंने सार्वजनिक सत्यधर्म, ब्राह्मणांचे कसब, गुलामगिरी, शेतक-याचा आसूड़, शिवाजी महाराजांचा पोवाडा, अस्पृश्यांची कैफियत आदि ग्रंथों का निर्माण किया | जिसके कारण दलित उद्धार एवं समाज सुधारणा को बहुमोल योगदान मिला |

**3.1.5.3. राजर्षि श्री शाहू महाराज :**

राजर्षि श्री शाहू महाराज ने दलितों पर अन्याय, अत्याचार, नजदिक से देखा था | ब्राह्मण प्रवृत्ति उन्होंने स्वयं अनुभव ली थी | उनका विरोध करनेवाले भारत के सबसे पहले

महाराज माने जाते हैं | उन्होंने अस्पृश्यता, दासता के भयानक स्वरूप के उच्चाटन हेतु निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण कार्य किया है | जैसे -

1. अपनी रियासत में छात्रावास शुरू किए |
2. पानी भरने के नल, तालाब, कुएँ तथा धर्मशालाएँ, अस्पताल, पाठशालाएँ और अन्य सार्वजनिक स्थल सबके लिए खुले किए |
3. दलितों की पृथक पाठशालाएँ बंद करवायी |
4. छात्रों को नि:शुल्क भोजनालय शुरू किया |
5. अनेक दलितों को वकील के रूप में नियुक्त किया |
6. दलित परिषदों का आयोजन किया |
7. ब्राह्मण व्यवस्था का विरोध करके दलितों को उचित सम्मान दिया |
8. दलितों के लिए नौकरी में आरक्षण रखा |
9. गुणवत्ताधारी छात्र को शिष्यवृत्ति घोषित की |
10. आम कलाकार, पहलवान आदि को प्रोत्साहित किया |

### 3.1.5.4. महात्मा गांधी :

महात्मा गांधी की विचारधारा मूलत: अध्यात्मवादी थी | उन्होंने राष्ट्र की उन्नति एवं मानव धर्म की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है | उन्होंने गौरवशाली भारत बनाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम स्पष्ट किया, जिसके कारण समाज सुधार का कार्य हो | इसमें दलित जागरण तथा दलितोद्धार एक महत्त्वपूर्ण सुधार योजना थी | महात्मा गांधी ने दलितों के अन्याय, अत्याचार का विरोध किया और अस्पृश्यता को हटाकर दलितों को न्याय, प्रतिष्ठा प्रदान करने का प्रयास किया | उन्होंने दलितोद्धार के लिए सत्याग्रहश्रम की स्थापना करना, दलितों को स्वतंत्र मतदार संघ देने के लिए अनशन करना, दलितोद्धार के लिए 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना करना, समर्थन में 'हरिजन' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक 1933 में शुरू करना, दलितों के लिए हजारों मंदिर, विद्यालय, पनघट खुले करना आदि कार्य किए | उनकी धारणा थी कि 'आजादी का सपना

तभी साकार होगा जब देश के सर्वोच्च पद पर अछूत व्यक्ति बैठेगा |' इस प्रकार वे दलितों के उद्धारक के रूप में सामने आये |

### 3.1.6. मोहनदास नैमिशराय के विवेच्य उपन्यासों में दलित चेतना :

मनुष्य समाजशील प्राणी है | मानव अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए तथा अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करता आया है | यही विरोध की भावना चेतना कहलाती है | चेतना का अर्थ है अपने अधिकारों के प्रति सजग रहकर उन अधिकारों को प्राप्त करना | दलित समाज को यह प्रेरणा डॉ.अम्बेड़कर, महात्मा फुले, राजर्षि शाहु, महात्मा गांधी आदि विद्वानों से प्राप्त हुई है | चेतना एक ऐसी शक्ति है जो दलितों में अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा देती है | समाज में जागृति, चैतन्य, आत्मभाव की भावना पैदा करनेवाली धारा 'चेतना' ही है | आज का दलित परंपरागत रूप में शोषित, पीड़ित, उपेक्षित रहा है | आज उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक चेतना पनपने लगी है |

आज दलित पारंपारिक जीवन प्रणाली से हटकर आगे बढ़ रहा है | वह समाज में परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्नशील हो रहा है | शिक्षा के माध्यम से समाज की उन्नति, विकास और रक्षा के लिए दलित सतत कार्यरत हो रहा है | दलित संगठन, दलित जागरण, समानता, हक्क की माँग, अधिकारों की प्राप्ति आदि के रूप में दलितों में चेतना दिखाई देती है | इससे यह स्पष्ट होता है कि आज दलितों में अस्मिता और पहचान का एहसास हो रहा है | वह जातिवादिता, रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वास की जड़ें उखाड़ना चाहता है एवं सभी समस्या का जड़ अज्ञान है, उसे हटाना चाहता है |

भारतीय समाज व्यवस्था में प्राचीन काल से पीड़ित, शोषित, उपेक्षित दलित रहा है | अब उनमें सामाजिक विषमता, अन्याय, भेदभाव, अभावग्रस्तता, हीनता के विरूद्ध विद्रोह पनप रहा है | जबसे उन्हें अस्मिता और पहचान का एहसास हुआ, तबसे सामाजिक परिवर्तन का प्रारंभ हुआ | अब वे शिक्षित होकर संगठन करके अन्याय के विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं | समाज में जो जाति व्यवस्था है और सवर्णो का जो दलितों के प्रति दृष्टिकोण है वह लोकतंत्र की दृष्टि से

बहुत ही शर्मनाक है | ऐसी व्यवस्था देखकर मृगजल की तरह लोकतंत्र भी अस्तित्वहीन निरर्थक लगता है | दलितों की सारी समस्याओं के मूल में जाति एक ऐसा शैतान बनकर आता है जो हर रास्ते में आतंकपूर्ण अवरोध बनकर खड़ा होता है |

आज पढ़ा-लिखा दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहा है | आज वह शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहता है | आज पिछड़ी जातियों के बच्चों को अधिक से अधिक सुविधाएँ मिलने के लिए बल दिया जा रहा है जिससे वे ऊँची जातियों के बच्चों की बराबरी करने में समर्थ हो सकें | हमारी सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थिति के पीछे धर्म ग्रंथ ही है | धर्मग्रंथ ही हमारे शोषण और अत्याचार की जड़े हैं | इन जड़ों को उखाड़ फेंकने की जरूरत है और उसके लिए जरूरी है कि लोग अधिक से अधिक पढ़ें ताकि इन धर्मग्रंथों में निहित अन्याय और असमानता के दर्शन को समझ सकें तथा अन्याय, शोषण और असमानता के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें |

समाजसुधारकों ने समाज सुधार की दृष्टि से अपना बहुमोल योगदान दिया तो साहित्यकारों ने समाज सुधार की दृष्टि से दलितों का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया | इस संदर्भ में डॉ. नगमा जावेद लिखती हैं - "दलित साहित्य में शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, दलित-जीवन का आक्रोश, आत्माओं का क्रंदन व्यथा एवं वेदना है |"[१] दलित विमर्श के प्रख्यात लेखक श्री. मोहनदास नैमिशराय ऐसे एक दलित पत्रकार एवं कवि है | हिंदी जगत में उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला है | उन्होंने स्वतंत्र लेखन को अपनाया | वे एक प्रतिबद्ध दलित कथाकार है | मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने साहित्य एवं पात्रों के चरित्र-चित्रण द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व निभाया है | उनके उपन्यास के पात्र गुलामी के प्रति एवं अपने अधिकारों के प्रति विद्रोह करते नजर आते हैं | उन्होंने रूढ़ि-परंपरा, अंधश्रद्धा, अज्ञान, अशिक्षा पर प्रहार किया है | उन्होंने जातियवादी मानसिकता का उच्चाटन करने का प्रयास किया है | इस प्रकार वे शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते हैं |

---

1. संपादक - रतनकुमार पाण्ड़ेय - अनभै, अंक -3, जुलाई-सितंबर 2004, पृष्ठ क्र. 74

### 3.1.6.1. गुलामी के प्रति विद्रोह :

प्राचीन काल से दलितों को गुलाम बनाकर सताया गया है | उनकी स्थिति का लाभ उठाकर नवाब, जमींदार, जागीरदार ने अत्याचार किया है | लेकिन इन अत्याचारों से तंग आकर दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर विद्रोह करने लगे हैं | उच्च वर्ग ने सत्ता एवं धन के बल पर सामंतवादी प्रवृत्ति को बनाए रखने का प्रयत्न किया एवं दलितों का शोषण करते रहे है | उनकी मानवता की अनुभूति मर चुकी थी | उनमें जब तक मनुष्यता का अविर्भाव नहीं होता तब तक मनुष्यता नहीं रह सकती | नवाबसाहब, जमींदार, जागीरदार मजदूरों से गधे जैसा काम करवाकर आमदनी नाममात्र देते हैं | भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है | समाज में ऊँच-नीच, सवर्ण-दलित आदि कई भेद थे | ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊँच वर्ग निम्नवर्ग का शोषण करता है | अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधश्रद्धा के कारण दलितों का जमींदार, जागिरदार, नवाबसाहब शोषण कर रहे हैं | भारतीय समाज व्यवस्था में आजादी के पूर्व से आजादी मिलने पर भी सवर्ण दलितों पर अत्याचार कर रहा है | जब दलित की दग्धता बुझेगी तब देश की एकता एवं अखंड़ता का सपना पूरा होगा |

आजादी मिलने से सभी स्वतंत्र हो गए थे | पर सवर्ण दलितों को स्वतंत्रता नहीं देना चाहते थे | वे उन्हें गुलाम ही बनाकर रखना चाहते थे | उनकी हवेली और खेतों पर उन्हें दस-दस, बारह-बारह घंटे मेहनत करनी पड़ती थी | तब जाकर उनके परिवार को रोटी नसीब होती थी | वे गुलाम न थे, पर गुलामों की तरह उन्हें रखा जाता था | वे हुक्म के तावेदार थे | उस तावेदारी में जरा-सी भी कहीं कमी रह जाती तो मालिकों के हाथ चलते थे या लातें | इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी दलितों ने जुल्म सहा था, लेकिन अब दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गए हैं | विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में पूरे शहर में आजादी मिलने की चर्चा थी | नवाबसाहब, जमींदार, जागिरदार, दलित सब स्वतंत्र हो गए थे | पर उच्चवर्गीय दलितों को स्वातंत्र्य नहीं देना चाहते थे | वे दलितों को गुलाम ही बनाकर रखना चाहते थे | इस संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का मत द्रष्टव्य है - "जातीय व्यवस्था हमारे देशवासियों के खून में सदियों से समा गयी है |"[१]

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृष्ठ क्र. 101

नवाबसाहब बंसी को कहता है कि तुम गुलाम थे, गुलाम हो, गुलाम रहोगे | बंसी में देश स्वतंत्र होने से चेतना जागृत हो गयी थी | वह गुस्से में भडकते हुए बोला - "जनाबे अली, हम न गुलाम थे, न गुलाम हैं और न गुलाम रहेंगे |"[१] बंसी नवाब साहब की गुलामी ठुकरा देता है | बरस-दर-बरस वह तथा उसकी जाति के लोग गुलामी तो भोगते आए थे | लेकिन बंसी उसका विरोध करता है | बरसों की गुलामी की जंजीरें कैसे एक झटके के साथ टूट गयी थी | बंसी को न इतिहास की जानकारी थो और न राजनीति की समझ | पर उसे अपनी जाति के जख्मों का ज्ञान अवश्य ही था | आजादी के बाद दलितों की अस्मिता और पहचान पुन: उभरने लगी थी | बस्ती के लोग अब सवाल और जवाब के फर्क को भी महसूस करने लगे थे | उनके हिस्से में केवल जवाब ही नहीं थे | वे सवाल करना भी सीख गए थे जहाँ आजादी ने कमेरों को ऊर्जा दी वहीं मुफ्तखोरों को जैसे खस्सी कर दिया था | उनके लिए गुलाम देश ही अच्छा था | इसलिए कि वे गुलामों की फौज बनाए रखना चाहते थे | गुलाम रहेंगे तो उनकी औरतों के साथ रंगरलियाँ मनाते रहेंगे |

बंसी के घर में बेटे के जन्म से खुशी का माहौल था | नवाबसाहब बंसी के घर बच्चे की जन्म की बात सुनकर आकर कहने लगे | अरे बंसी, पता चला कि तेरे घर बच्चा हुआ है | इसलिए चला आया और फिर तुम तो हमारे ही आदमी हो, अब हमारे घर चाकरी नहीं करते तो क्या हुआ इसे तो हमारी हवेली पर काम करने भेजना | बंसी ने सुना तो बिना एक पल की देरी किए वह बोला - "नवाबसाहब, न अब मैं किसी की गुलामी करूँगा और न मेरा बच्चा |"[२] मुझे गुलाम बने रहने की आदत नहीं नवाबसाहब | वैसे भी देश अब आजाद हो गया है | अब न कोई किसी का गुलाम है और न कोई किसी का मालिक | सब बराबर है |

बस्ती में भी ऐसे सवाल उभरने लगे थे | वे सवाल अस्मिता और पहचान के थे | उन सवालों से स्वाभिमान का बोध होता था | सवाल करनेवालों के भीतर विश्वास था | बस्ती में सबसे पहले बंसी ने गुलामी छोड़ी फिर बाद में एक-एक कर अन्य लोगों ने | जैसे-जैसे उन्हें गुलामी का एहसास हो रहा था वैसे-वैसे वे नवाबों/रइसों के यहाँ से अपने-अपने काम-धंधे छोड़ रहे थे |

---

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 28
2. वही - पृष्ठ क्र.38

पुरूषों की देखादेखी औरतें भी जमींदारों तथा काश्तकारों के घरों तथा खेतों से अपनी अपनी मजदूरी छोड़ रही थी | उनके भीतर भी चेतना का सूरज उगने लगा था | जो उनके विचारों को प्रखर बना रहा था | वे अब दलितों में भी दलित नहीं रहना चाहती थी | वे अब अबला नहीं रही थी, बल्कि सबला बन रही थी | वे शिक्षा का मोल समझने लगी थी और अपने-अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने के लिए भेजने लगी थी |

अत: कहना सही होगा कि देश आजाद होने पर भी सवर्ण दलितों को आजादी देना नहीं चाहते थे | उन्हें गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं | आज बोलबाला है कि राम राज्य आ रहा है लेकिन सागर के किनारे बैठकर तुफ़ान की बातें करना आसान है | दलितों की यातनाएँ तो दलित ही समझ सकते हैं | लेखक ने बंसी को एक जागरूक नायक के रूप में प्रस्तुत करते हुए गुलामी का विरोध किया है | जिससे पूरा दलिन समाज प्रेरणा पा सकता है |

### 3.1.6.2. रूढ़िग्रस्त दलितों में चेतना :

हिंदू संस्कृति और रूढ़ि-परंप्रा मनुस्मृति के तत्वों पर आधारित है | प्राचीन काल से रूढ़िग्रस्त दलितों पर सवर्ण अन्याय, अत्याचार करते आए हैं | उनपर अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास का प्रादुर्भाव था | धर्मग्रंथ को आधार बनाकर ब्राह्मण दलितों को लूट रहे थे और अपने पेट बढ़ा रहे थे | वे दलितों को सिर्फ गुलाम ही बनाकर रखना चाहते थे | लेकिन अब देश आजाद हो चुका है | वह इन अन्यायी रूढ़ि-परंपरा को पहचानने लगा है | वह उसका खुलेआम विरोध कर रहा है | आजादी के बाद शिक्षा के द्वार दलितों के लिए खोले गए | जिससे वह जागृत, सज्ग एवं चेतित हो गया है | वह रूढ़िग्रस्त मानसिकता का विरोध कर रहा है |

विवेच्य उपन्यास - 'मुक्तिपर्व' में बंसी के घर में बेटे के जन्म से खुशी का माहौल था | पंड़ित का काम था जन्म होनेवाले बच्चे का नामकरण संस्कार करना | आज पहली बार पंड़ित दलित बस्ती से निराश लौटा था | उसके ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगा था | ऐसा क्यों हुआ ? आज तक तो ऐसी स्थिति नहीं आयी थी | उसके भीतर सवाल-दर-सवाल उभरने लगे थे | बचना चाहते हुए भी वह सवालों से बच नहीं पा रहा था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका दबदबा टूट गया था | धर्म की बिसात उलट गयी थी | इसलिए कि आज एक पंड़ित बाजी हार गया था और दलित जीत गया

था | पंड़ित ने नाम सुझाया था, बुद्धू | बस इसी पर बंसी बुरा मान गया था | उसके जीवन में उसके और साथी दलित बस्तियों में होनेवाले बच्चों के ऐसे ही नाम सुझाते रहे थे, जिन्हें दलित खुशी-खुशी मानते रहे थे लेकिन आज अचानक क्या हो गया था? उसकी समझ में नहीं आ रहा था | बंसी ने पंड़ित को घर से बाहर निकाला था | इस प्रकार बंसी प्रेरित दिखाई देता है | इस संदर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि का मत द्रष्टव्य हैं-"हजारों वर्षो की प्रताड़ना, शोषण, द्वेष, वैमनस्य और भेदभाव से दबा दलित अपनी अस्मिता की खोज के लिए जागरूक दिखाई पड़ता है|"[१] बंसी ने बच्चे का नाम स्वयं रखा था सुनीत | बंसी ने सीधे-सीधे रूढ़ि-परंपराओं को तिलांजलि दी थी |

सुनीत के कक्षा के अध्यापक पाण्ड़े थे | वह जाति से ब्राह्मण थे | वह सुनीत का उपहास करता है | सुनीत उसका जवाब अपने तरिके से देना चाहता है | उस साल सुनीत कठोर अध्ययन करता है | वह उस परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता है | उससे अध्यापक पाण्ड़े के चेहरे पर खुशी के चिह्न नहीं थे बल्कि ईर्ष्या की लकीरें उभरी थी | इस संदर्भ में सुदेश तनवीर कहते हैं- "जब तक हम अपनी कथित धर्म सम्मत शास्त्रीय व्यवस्था को बदलने के लिए उठ खड़े नहीं होते तब तक समाज से जातीय वंश का निकाल पाना लगभग असंभव है |"[२] दुश्मन चाहे आम आदमी हो या खास आदमी | सवर्ण कभी भी नहीं चाहते कि हमारे बच्चे पढ़े-लिखें | क्योंकि अगर वे पढ़-लिख गए तो उन्हें गुलामी की फौज कहाँ से मिलेगी | उनकी सेवा-टहल फिर कौन करेंगा | उनके जानवरों के सामने चारा कौन ड़ालेगा, पानी कौन पिलाएगा | उनके बदन की मालिश कौन करेंगा | उनकी मक्कारी से हमें बच कर रहना है | इस प्रकार की रूढ़िग्रस्त मानसिकता का बंसी विरोध करता है |

कहना न होगा कि लेखक ने बंसी के माध्यम से रूढ़िग्रस्त दलितों में चेतना निर्माण करने का प्रयास किया है | हजारों वर्षो की प्रताड़ना, शोषण, रूढ़िवादिता आदि से दबा दलित अपनी अस्मिता की खोज के लिए जागृत करने का प्रयास किया है |

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ क्र.29
2. संपादक कुसुम चतुर्वेदी - नया मानदंड़, अंक 2, अप्रैल-जून 2003, पृष्ठ क्र. 37

**3.1.6.3. जातिगत विद्रोह :**

दलित समाज का एक अंग है | लेकिन उसका स्थान गौण है | उच्चवर्ग अपने अधिकारों का फायदा उठाकर दलितों को पिसता रहा है | आज दलित अपने अधिकारों के प्रति आक्रोश करता है | समाज में होते अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ विद्रोह प्रकट करता है | जातियता भारत को लगा हुआ एक कलंक है | इसी जातियता ने दलितों को गुलामी, दुख, वेदना के सिवा कुछ नहीं दिया है | जाति के नाम पर जीना सबसे भयावह और तकलीफ देह होता है | ग्रामीण लोग अपनी जाति व्यवस्था को सुरक्षित रखना चाहते हैं | अत: जातीय भेदाभेद की समस्या का निर्माण हुआ है | भारत में व्यक्ति समाज जातियता के आधार पर अलग-अलग समूहों में विभाजित हो गया है | इससे परस्पर द्वेष, ईर्ष्या एवं शत्रुता की भावना बढ़ रही है | इससे राष्ट्रीय एकात्मता, उदात्त मानवी मूल्यों का -हास हो रहा है | आज आधुनिक तथा उत्तर आधुनिकता के युग में भी लोग जाति-पाति का ध्यान रखते हैं | आज जाति व्यवस्था से दलित और सवर्ण संघर्ष उभरकर सामने आया है | जब तक जातिय भेदाभेद की समस्या रहेंगी, तब तक मानव धर्म की स्थापना नहीं हो सकती |

अब दलित जातिगत भेदाभेद के प्रति विद्रोह करता है | यह प्रेरणा उन्हें डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर जी से मिली है | आजादी के पूर्व से अर्थात महाड़ के चवदार तालाब सत्याग्रह से डॉ.अम्बेड़कर जी ने जातीय भेदभाव निवारण हेतु कार्य को प्रारंभ किया | दलित प्राचीन काल से जातियता का दुख सहते आए हैं | उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस ज्वाला में जलकर खाक हो गयी थी | उन्हें भयावह वेदना को सहना पड़ा था | भारत में हिंदू धर्म शास्त्र के अनुसार मनुस्मृति इस ग्रंथ में दलितों को निम्न माना गया है | उस ग्रंथ के अनुसार हिंदू धर्म के विद्वान आचरण करते आए थे और दलितों का शोषण करते थे | प्रकृति का मुफ्त का पानी भी उनके नसीब नहीं था अथवा असंख्य दलित गरीब जनता को प्याऊपर नलकी से पानी दिया जाता था | उनके साथ बोलना और स्पर्श करना भी त्याज्य माना जाता था | उन सवर्णों को जानवर प्रिय लगते हैं, लेकिन दलितों से वे कोसों दूर रहते हैं | अलग नियम था इस भारतीय धरती पर | जो दलित परंपरा से सहते आए थे | ऊँच-नीच भेद तथा जाति का संकुचित दायरा मानव निर्मित ही है |

सदियों से मनुष्य समाज के इस कुप्रथा को संस्कार समझकर मानता आया है | इस संस्कारों की श्रृंखला को तोड़कर दलित मानव मुक्ति करने की अभिलाषा करें तो सदियों से संस्कार भरे मन को ड़र लगता है कि कहीं उससे ब्राह्मणत्व कलंकित न हो जाए | अत: ब्राह्मणत्व को निष्कलंक बनाए रखने की कोशिश में दलितों का गला घोटा जा रहा है | उन्हें सब सुविधा से दूर रखकर पशुवत जीवन व्यतीत कर रहे हैं | लेकिन अब दलित अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गए हैं | अब वे अपने अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्‍ध आवाज उठा रहे हैं |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में सुनीत ने जब से स्कूल जाना शुरू किया उसके भीतर प्रौढ़ता उछाल मारने लगी थी | समाज के यथार्थ को उसने बहुत जल्द जान लिया था | सुनीत और बंसी को प्याऊवाले ने नलकी से पानी पिलाया | सुनीत का स्वर नाराजगी से भरा था | दिन का समय था | बच्चे सभी इकट्ठे होकर प्याऊपर गए थे | आगे-आगे मास्टरजी थे और पीछे-पीछे बच्चे | उनमें लड़के भी थे और लड़कियाँ भी | बस्ती के आठ-दस आदमी भी पीछे-पीछे चले | उन सभी में अन्याय और विषमता के खिलाफ लड़ने की भावना जोर मार रही थी | हालाँकि कई बार बस्ती के लोगों ने पंड़ित जी को नलकी से पानी पिलाने के बारे में टोका था | लेकिन पंड़ित के भीतर विषमता भरी थी इसलिए उसका व्यवहार भी ऐसा ही था | इस संदर्भ में शरणकुमार लिंबाले का मत द्रष्टव्य हैं - ♁

"पानी तेरा रंग कैसा ?
ब्राह्मण का हाथ लग गया तो तीर्थ जैसा |
दलितों का हाथ लग गया तो अपवित्र जैसा |
पानी तेरा रंग कैसा ?"[१]

पंड़ित जी के हाथ में नलकी को देखकर सभी गुस्से में थे | प्याऊ पर सुनीत ने नलकी में पानी ऊँड़ेलते हुए कहा कि लो बच्चों, पानी पी लो | सभी ने नलकी को देखकर उसका विरोध किया | सुनीत ने आगे बढ़ते हुए नलकी को खींच कर नीचे ड़ाल दिया | उसके इस व्यवहार से पंड़ित जी हतप्रभ रह गए | वे सोच भी नहीं सकते थे कि एक छोटा-सा बच्चा पानी की नलकी

1. शरणकुमार लिंबाले - हिंदू, पृष्ठ क्र.97

को खिंचकर फेंक देगा | पंड़ित उनका विरोध करना चाहता था कि तुम चमार हो | उसके पहले सुनीत ने उसकी मानसिकता को पहचानते हुए कहा कि, "हाँ-हाँ पंड़ित जी, हम ढ़ेढ़ चमार हैं, पर अब देश आजाद है | इतना समझ लो तुम्हें ऐसा करने पर जेल जाना भी पड़ सकता है |"[१] बच्चों ने इस शर्त पर पानी पिया कि पंड़ित जी सभी के सामने कान पकड़कर माफी माँगे और आगे से सभी को एक ही बर्तन से पानी पिलाने का विश्वास दें | पंड़ित जी ने मजबूरन वैसा ही किया | सभी ने खुशी-खुशी पानी पिया |

विवेच्य उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' में भोजला गाँव का मिजाज बदल रहा था | गाँव के दलितों के दो लड़के सेना में भर्ती हो गए थे | पिछले माह लौटकर आए तो गाँव के सरपंच की आँखों में आँखें ड़ालकर उन्होंने बातें की | गाँव के इतिहास में यह पहली बार हुआ था| वरना वहीं दलित ठाकुर और सरपंच की मार सहते-सहते बिलबिलाते थे | सरपंच की भैंस मर गयी थी | कोई चमार उसे उठाने नहीं आया | दो दिन आसपास सड़ाँध रही थी और तनाव भी रहा | चमार जाति के लोग टस से मस नहीं हुए | मजबूर होकर रात में चोरी छुपे दूसरे गाँव से तीन-चार लोगों को सरपंच ने बुलवाया | तब जाकर सडाँध दूर हुई | इस घटना से दलितों को अपनी ताकत का एहसास हो गया था | साथ ही उस गुलामी का भी, जिसे सदियों से वे सहते आए थे |

अत: कहना होगा कि लेखक ने विवेच्य उपन्यासों में जातीयता पर गहरी चोट की है | उन्हें जातीयता के चक्रव्यूह में फँसाकर गुलाम बनाया गया था | इस प्रकार की जातीयवादी मानसिकता पर लेखक ने कठोर प्रहार किया है |

### 3.1.6.4. शिक्षा के प्रति चेतना :

प्राचीन काल से दलितों को शिक्षा से दूर रखा गया | दलित लोग प्राचीन काल से अशिक्षित रहे हैं | शिक्षा की सुविधा उन्हें प्राप्त नहीं हो सकी | उन्हें पाठशाला में प्रवेश नहीं मिला, कभी-कभी पाठशाला के बाहर बिठाया जाता था | आधुनिक काल में अंग्रेजों के कारण शिक्षा के द्वार सबके लिए खोले गए | दलित समाज को शिक्षित करने का संदेश डॉ. अम्बेड़कर जी ने दिया है | परिणामत: आज दलित शिक्षित हो रहे हैं | भारतीय संविधान के कारण आज का दलित

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 54

अपने अधिकार के लिए आगे बढ़ रहा है | सभी दलित समस्याओं की जड़ अज्ञान, अंधश्रद्धा एवं अशिक्षा है प्राचीन काल से दलित समाज राजनीति से दूर है | भौतिक सुख-सुविधाओं से भी दूर है | इसी कारण दलित अज्ञानी, अंधविश्वास एवं अशिक्षित रहा है | परिणामत: उनका शोषण हो रहा है | लेकिन आज दलित शिक्षित हो रहा है | जिससे समाज व्यवस्था की नींव हिल रही है | आजादी के बाद दलितों का वजूद दहकने लगा है | डॉ.अम्बेड़कर जी के "शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो" इस मूलमंत्र से प्रेरित हो गए हैं | डॉ.अम्बेड़कर जी ने कठोर परिश्रम करके दलितों को न्याय देने का प्रयास किया | आज दलित शिक्षित होकर डॉ.अम्बेड़कर जी के अधूरे सपने को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं | आज दलित परंपराओं की दीवारें तोड़कर शिक्षित होकर अपना अस्तित्व निर्माण कर रहा है |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में शिक्षा के माध्यम से दलित समस्याओं को हल करने का प्रयास किया गया है | जो डॉ.अम्बेड़कर जी का गुलामी से मुक्ति हेतु मूलमंत्र भी है | सुनीत का स्कूल में अध्यापक पाण्ड़े उपहास करता है | वह जाति से ब्राह्मण था | उसने सुनीत के अस्मिता के तार-तार कर दिया था | इस संदर्भ में रजनी तिलक का मत द्रष्टव्य है - "भारतीय शिक्षा व्यवस्था के जनक शिक्षकों के मनपटल से ही जाति का संस्कार नहीं निकल सका तो वह छात्रों को कैसे समानता की शिक्षा दे सकेंगे ?"[१] लेकिन अब सुनीत का वजूद दहकने लगा था | सुनीत मास्टर की बात का जवाब अपने तरीके से देना चाहता था | इस संदर्भ में डॉ.अर्जुन चव्हाण जी का मत द्रष्टव्य है - "शिक्षा, विवेक और बुद्धि के बल पर दलित अब न झूकना चाहता है और न अपमान सहना |"[२] इसी धुन में सुनीत उसी दिन से लग गया था | उसके सिर पर अधिक से अधिक पढ़ाई करने का जुनून था | उनके कच्चे घर में लाईट कनेक्शन नहीं था, इसीलिए सुनीत बाहर गली के किनारे पर लगे लैम्प पोस्ट के उजाले में पढ़ता था | वह वहीं होकर पढ़ता और जब थक जाता तो नीचे जमीन पर बैठ जाता | वह रात-दिन पढ़ता था | सच बात तो यह थी कि सुनीत मेहनत इसलिए ही कर रहा था कि उनकी जाति का सिर ऊँचा हो, उनके मान-सम्मान को

1. संपादक कुसुम चतुर्वेदी - नया मानदंड, अंक - 4, अप्रैल-जून 2003, पृष्ठ क्र.49
2. संपा. डॉ.रतनकुमार पाण्ड़ेय - अनभै, अंक - 4, अक्तूबर-दिसंबर 2004,पृष्ठ क्र.19

जो अब तक आघात लगे हैं, उनसे उभर कर वे आगे आए | बंसी ने डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर के बचपन की दबी हुई कहानी सुनीत को लाकर दी थी, जो एक ही बैठक में उसने पढ़ ड़ाली थी | पढ़ने के बाद सुनीत बार-बार यहीं सोचता हैं कि जब डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर जी इतनी गरीबी में पढ़ सकते हैं तो वह क्यों नहीं पढ़ सकता | डॉ. अम्बेड़कर ने तो सारे दलित समाज का सिर ऊँचा किया था | उन्हें गुलामी से छुटकारा दिलाया था | उन्हें एहसास दिलाया था कि वे गुलाम नहीं है | उन्हें गुलामी की ओढ़ी चादर उतार कर फेंक देनी चाहिए |

अंततः सुनीत की मेहनत रंग लायी | वह उस परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ | रिज़ल्ट कार्ड मिले तो सबसे पहले सुनीत ने कक्षा अध्यापक पाण्ड़े को धन्यवाद दिया लेकिन पाण्ड़े को उसका प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना अच्छा नहीं लगा | अब सुनीत टीचर्स ट्रेनिंग में पढ़ रहा था | उसने इस बार भी कठोर अध्ययन किया था | आज का दिन सचमुच उसके लिए महत्त्वपूर्ण था | आज के दिन सुनीत को शिक्षक बनने का प्रमाणपत्र मिला था | आजादी के बाद की नई पीढ़ी को शिक्षक बनाने का यह ऐतिहासिक दिन था | सुमित्रा ने उससे कहा था, "वे दिन बीत गए जब पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों का काम था | अब तुम भी पढ़ा सकते हो सुनीत |" डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर जी ने संविधान बनाकर सबको बराबर कर दिया था | सुनीत इतिहास भी बदलना चाहता था और वर्तमान भी | वह महसूस करता था कि बिना इतिहास के ज्ञान से वर्तमान नहीं बदलेगा और जब तक वर्तमान नहीं बदलेगा तो भविष्य में परिवर्तन ही नहीं होगा | दलितों का जीवन वैसे ही नीरस रहेगा, जिसमें उसे अनगिनत रंग भरने थे | वे रंग समता के थे तथा भाईचारे के थे | जीवन इन्हीं रंगों से ही तो खूबसूरत बनता है | उन रंगों का उसे एहसास भी हुआ था | वह जानता था कि बिना रंगों का जीवन कैसा होता है | समाज में समता और बराबरी नहीं तो आदमी अलग-थलग हो जाता है | जयप्रकाश कर्दम का मत इस संदर्भ में द्रष्टव्य है- "जीवन की लड़ाईयाँ को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है | शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है |"[१] शिक्षा विषयों के अलावा उसने इन दिनों दर्शन पर बहुत-सी किताबें पढ़ ली थीं | जिसमें डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर जी की 'फिलासफी ऑफ

1. जयप्रकाश कर्दम - छप्पर, पृष्ठ क्र. 44

हिंदुइज्म' से लेकर कार्ल मार्क्स की 'दास केपेटल' तक थीं | गांधी को भी उसने पढ़ा था और नेहरू को भी | वह इन विचारों के माध्यम से समाज में परिवर्तन चाहता था |

कहना सही होगा कि लेखक ने शिक्षा के माध्यम से दलित समाज की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया है जो डॉ. अम्बेड़कर जी के गुलामी से मुक्ति हेतु मुलमंत्र रहे हैं |

**3.1.6.5. अवैध व्यवहार के प्रति विद्रोह :**

प्राचीन काल से दलितों पर अन्याय, अत्याचार होता आया है | उन्हें सदैव सवर्णों के अवैध व्यवहार का सामना करना पड़ा है | जिस कारण दलितों के जीवन में अनेक समस्याएँ उभरकर सामने आयी है | दलितों में अंधविश्वास, उनकी धार्मिक भावना, नए-नए विचारों का अभाव आदि के कारण दलित पिसता जा रहा है लेकिन आज दलितों में संघर्ष की भावना पनपने लगी है | प्राचीन काल से दलित शिक्षा से दूर रहा है | आजादी के बाद दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गया है | वह शिक्षा एवं अधिकारों के माध्यम से अपनी समस्याओं का हल सोच रहा है | वह अपने अधिकारों के लिए विद्रोह कर रहा है | आज की पीढ़ी अधिकाधिक आक्रमक हो रही है | संविधान में भी दलितों के लिए प्रावधान रखा गया है | आज दलित डॉ. अम्बेड़कर जी के विचारों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' के दलित बस्ती में विद्रोह और सुधार की प्रक्रिया साथ-साथ चल रही थी | जिससे रचनात्मक परिवर्तन का जन्म हुआ था | वह परिवर्तन नयी पीढ़ी को अधिक रास आया था | पुरानी पीढ़ी के लोग अभी भी परंपराओं को सीने से चिपकाए हुए थे | उनके लिए परंपराएँ ही समाज के नियम थे | हालाँकि आजाद भारत के संविधान ने समाज विरोधी उन नियमों को समाप्त करने की मुहिम चलाई थी | दलितों के लिए डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर ने नए जीवन का संचार किया था | उन्हीं सपनों को साकार करने का प्रयास किया जा रहा था और आज इसलिए बस्ती के लोगों की पंचायत हुई थी | पंचायत में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए थे | पहला तो यह कि डॉ. बाबासाहब अम्बेड़कर के नाम पर बस्ती में पुस्तकालय शुरू किया जाए | दूसरा यह कि कलालखाने से जुड़ी जगह को कब्जे में लिया जाए | इससे प्रेरित होकर स्त्री-पुरूषों ने कलालखाने के भीतर जाकर शराब की बोतलें तोड़ ड़ाली | बाद में पुलिस के आने पर संघर्ष भी

हो गया | कई लोगों को चोटें भी आयी | बस्ती के लोगों का किसी सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए यह पहला आंदोलन था | जिसमें उन्हें सफलता मिली थी | कलालखाना बंद हो गया था | बाद में कलालखाने की जगह पर स्कूल खुला था |

### 3.1.6.6. दलितों में कर्तव्य निर्वाह -

प्राचीन काल से सभी दलित समस्याओं की जड़ अज्ञान, अंधश्रद्धा एवं अशिक्षा है | भारतीय समाज व्यवस्था में जातीय भेदाभेद और छुआछूत की भावना प्रबल है | भारतीय समाज व्यवस्था में वर्णव्यवस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है | ऊँच-नीच के भेद से सवर्ण दलितों का शोषण करता है | जातिभेद के कारण पीड़ा और वेदना को तमाम दलित जाति सहती आयी है | प्राचीन काल से दलित नारकिय जीवन व्यतीत कर रहा है | हिंदू समाज ने दलितों को अज्ञानी, दारिद्री बनाकर परंपरा की खाई में धकेलकर सताता रहा है लेकिन आज दलित अपने अन्याय के विरूद्ध विद्रोह करता है | भारतीय संविधान के कारण आज का दलित अपने अधिकारों के लिए आगे बढ़ रहा है | आज दलित अपने कर्तव्य निर्वाह के लिए प्रयास कर रहा है | आजादी के बाद भी सवर्ण दलितों को गुलाम ही बनाकर रखना चाहते हैं लेकिन अब दलितों में अस्मिता और पहचान का एहसास हो रहा है | अब उनमें शिक्षा के माध्यम से चेतना के अंकुर उभर रहे हैं | अब वे सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा एवं मानवधर्म की स्थापना करना चाहते हैं |

विवेच्य उपन्यास 'मुक्तिपर्व' में देश आजाद होने से बंसी गुलामी ठुकरा देता है | वह बरसों की गुलामी की जंजीरें एक झटके में तोड़ देता है | वह बच्चे के नामकरण संस्कार पर पंड़ित जी को घर से बाहर निकालता है | इस प्रकार बंसी जागृत दिखाई देता हैं | इस संदर्भ में डॉ.अर्जुन चव्हाण जी का कहना सही लगता हैं- "आत्मचेतना और स्वाभिमान के फलस्वरूप दलितों में संकल्पों की शक्ति परिलक्षित होती है |"[1] बंसी ने बच्चे का नाम स्वयं रखा था | वह अपने बच्चे को पढ़ाता भी है और अच्छे संस्कार भी करता है | बंसी से प्रेरित होकर अन्य स्त्री-पुरूषों ने भी गुलामी ठुकरा दी थी | जो उनके विचारों को प्रखर बना रहा था | उनमें अस्मिता और पहचान उभरने लगी थी | वे शिक्षा का महत्व समझने लगे थे और अपने-अपने बच्चों को

1. संपादक रतनकुमार पाण्ड़ेय - अनभै, अंक - 4, अक्तूबर-दिसंबर 2004, पृष्ठ क्र - 19

स्कूल में पढ़ने के लिए भेजने लगे थे |

पक्षी आकाश में उड़ते हैं, पर अपनी जगह को नहीं भूलते | उनके भीतर पहचान की समझ होती है, पर आदमी जब विकास के अनगिनत चरण से होकर गुजरता है तो वह अपनी जमीन को भूल जाता है, पर सुनीत अपनी जमीन को नहीं भूल पाया था | आज वह बस्ती के उसी स्कूल में लौट आया था, विद्यार्थी के रूप में नहीं बल्कि अध्यापक के रूप में | सुनीत की लालसा थी कि बस्ती का हर बच्चा पढ़ें-लिखें | वह बच्चा चाहे लड़का हो या लड़की | बस्ती के बच्चों को शिक्षित करना ही उसका मिशन था, कर्तव्य था और धर्म था | बस्ती के स्कूल में अध्यापक होने से स्वयं बस्ती के लोगों को भी बल मिला था | उनके भीतर चेतना के अंकुर और भी तेजी के साथ उभरे थे | उस दिन सुमित्रा भी आई थी | केवल एक दिग्दर्शक के रूप में नहीं बल्कि अध्यापक के रूप में | सुमित्रा ने भी अपनी नियुक्ति इसी स्कूल में कराई थी | उस दिन सुनीत ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा था - "सुमित्रा, अभी हमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी पूरी करनी है | क्या यह होगा कि हम उसी जिम्मेदारी को मित्र बनकर निभाएँ |"[१]

कहना होगा कि लेखक ने विवेच्य उपन्यासों से दलितों को कर्तव्य निर्वाह करने के लिए प्रेरित किया है | उन्हें गुलामी से मुक्त होने के लिए अस्मिता एवं पहचान का एहसास कराया है | वे शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन करना चाहते हैं |

### 3.1.6.7. दलित नारी चेतना -

भारतीय समाज में नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण चारों तरफ से दिखाई देता है | भारतीय पुरूषप्रधान संस्कृति ने नारी को सिर्फ भोग की वस्तु माना है | सामंतवादी, पूँजीपति दलित नारी को सिर्फ सुख-चैन का साधन मानकर उसका शारीरिक शोषण करते हैं | प्राचीन काल से नारी दलितों में भी दलित है | सवर्ण समाज ने छुआछूत की समस्या तो सामने लायी, परंतु दलित नारीयों से यौन संबंध बनाए रखने में परहेज नहीं रखा | इस संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का मत द्रष्टव्य है - "हमारे समाज ने जातिभेद को तिलांजलि न देकर अपनी

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 139

जातिगत श्रेष्ठता के अहं को बरकरार रखा किंतु दलित नारी से यौन संबंध बनाए रखने में परहेज नहीं किया |"[१]

मछरिया जात से भंगी, पर भा गयी थी नारायण शास्त्री को | मछरिया को नारायण शास्त्री ने अपने घर में रख लिया थ | दासी या रखैल बनाकर नहीं बल्कि पत्नी के रूप में | जो सीधे-सीधे ब्राह्मण समाज को चुनौती थी | झाँसी में अन्तर्जातीय विवाह की शायद पहली घटना थी | झाँसी के राजा गंगाधर राव की रूचि थी तो रंगमहल में या रंगशाला में | मछरिया शास्त्री को कहती है कि राजा पराई स्त्रियों को चुमत हैं, पावन स्त्रियों को भी हाथ लगावत है, अब उनका धर्म भ्रष्ट नहीं होता | शास्त्री कहते हैं कि वे राजा है, कुछ भी करें | मछरिया भड़क उठती है, वे राजा हैं, कुछ भी करें और हम परजा | सबई नियम का परजाई के लाने हैं | राजा अपने लाने कुछ नई सोचत | अरे बीस दासियों को हरम में रख सबई के साथ रंगरलिया, फिर न आग ना बुझई |

झाँसी हिंदू रियासत थी | मछरिया और शास्त्री को दरबार में पेश किया गया दरबारियों ने मछरिया को लालच दिया | शायद मन बदल जाए | धमकाया भी गया | शास्त्री को शास्त्रों की दुहाई दी गई | लोकलज्जा और लोकमर्यादा का वास्ता दिया गया | पर मछरिया और शास्त्री में टूटन क्या दरार तक नहीं मिली | न शास्त्री मछरिया को छोड़ने के लिए तैयार थे और न मछरिया शास्त्री को | उनकी देह दो थी, पर सांस जैसे एक | वे एक-दूसरे के लिए मरने मिटने को तैयार थे | मछरिया और शास्त्री का प्रेम न राजा को रास था और न दरबारियों को | अंततः राजा को फैसला देना पड़ा | फैसला था देश से निकाले जाने का | फिर भी वे दोनों हारकर भी जीत गए थे और राजा जीतकर भी हार गया था | दरबार में कही गयी दो टूक बेबाक बातें स्वयं राजा के भीतर फाँस की तरह चुभ गई थी | मल-मूत्र उठानेवाली किसी औरत ने पहली बार राजा की आँखों में आँखें डालकर बात की थी | दरबार और सिंहासन जैसे हिल गए हों | सभी के अस्तित्व को एकबारगी झटका दे दिया था मछरिया ने |

---

1. डॉ. रतनकुमार पाण्ड़ेय - अनभै, अंक - 4, अप्रैल-जून 2004, पृष्ठ क्र. 21

कहना न होगा कि परंपरा से देवी के सिर पर पुष्प एवं दलित नारी के सिर पर जूते रखे जाते हैं | लेखक ने मछरिया को एक जागरूक दलित नारी के रूप में प्रस्तुत किया है | वह जातीयता के चक्रव्यूह को भेदते हुए आगे निकल गयी है | जिससे पूरा दलित समाज प्रेरित हुआ है | इसमें संदेह नहीं है |

**3.1.6.8. नेतृत्वकुशल दलित नारी :**

प्राचीन काल से नारी को दलित से बदतर जिंदगी सहनी पड़ी थी | लेकिन कुछ नारियों ने इन दीवारों को लाँघकर अपना अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास किया | लेकिन इतिहासकारों की उनपर नजर नहीं पड़ी है | प्राचीन काल से महिलाओं को घर में कैद कर रखा था | उनका जीवन रूढ़ि और परंपराओं के बीच बीतता जाता था | वह सदैव घरों की दीवारों के अंदर छटपटाती रहती थी | मोहनदास नैमिशराय जी इन नारियों का यथार्थ चित्रण करते हैं एवं इन जंजीरों को तोड़नेवाली नेतृत्वकुशल वीरांगना झलकारी बाई को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं |

'वीरांगना झलकारी बाई' में नेतृत्वकुशल दलित नारी के रूप में झलकारी बाई सामने आती है | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वीरांगना झलकारी बाई का महत्त्वपूर्ण प्रसंग हमें 1857 के उन स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है, जो इतिहास में भूले-बिसरे हैं | बहुत कम लोग जानते हैं कि वीरांगना झलकारी बाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी और झलकारी बाई ने समर्पित रूप में न सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया बल्कि झाँसी की रक्षा में अंग्रेजों का सामना भी किया | झलकारी बाई दलित पिछड़े समाज से थी और निस्वार्थ भाव से देश-सेवा में रही | ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को याद करना हमें जरूरी है | इस नाते भी कि जो जातियाँ उस समय हाशिये पर थी, उन्होंने समय-समय पर देश पर आयी विपत्ति में अपनी जान की परवाह न कर बढ़-चढ़कर साथ दिया | वीरांगना झलकारी बाई स्वतंत्रता सेनानियों की उसी श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी रही है | न धर्म रक्षा और न जाति रक्षा, झलकारी ने चूड़ियाँ पहनना छोड़ देश रक्षा के लिए बंदूक हाथ में ली थी | उसे न महल चाहिए था, न कीमती जेवर और न रेशमी कपड़े और न दुशाले | वह न तो रानी थी और न पटरानी | वह किसी सामंत की बेटी भी नहीं थी तथा किसी जागीरदार की पत्नी भी नहीं | वह तो गाँव भोजला के एक साधारण

कोरी परिवार में पैदा हुई थी और झाँसी के पूरन को ब्याही गयी थी | पिता भी आम परिवार से थे और पति भी, लेकिन देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान ने उन्होंने इतिहास में खास जगह बनाई थी |

तत्कालीन समाज में महिलाओं में हथियार चलाने की कहाँ परंपरा थी | लेकिन झाँसी की रानी ने इसका दर्शन ही उलट दिया था | उन्होंने दलित समाज की एक महिला को महिला सेना का कमांड़र बना दिया था | दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर भी, लेकिन उनकी अपनी पहचान बनें, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहते थे | इसी बीच दलित पिछड़े समाज के लोगों में जैसे उत्साह का नवीन संचार हुआ था | विशेषरूप से महिलाओं की सेना बनाने की रानी के प्रस्ताव का तो स्वयं उन वर्गों की महिलाओं ने स्वागत किया था | वह सोचती थी - घर-गृहस्थी के काम धन्धों के अलावा तलवार चलाना, भाला फेंक, बंदूक चलाना आदि सीखने को तो मिलेगा | झलकारी बचपन से ही वीर और साहसी थी | वह ईमानदार और मेहनती थी | उसके मन में आरंभ से ही सैनिक बनने की लगन थी | सैनिकों को वर्दी में देख तथा युद्ध का ड़ंका बजते हुए सुनकर उसकी भुजाएँ भी रणक्षेत्र में जाने को फड़कने लगती थी | उसके मन में देश प्रेम की प्यास थी | जब कभी उसके आसपास तलवारें चलने तथा गोला फूतने की गूँज होती, जैसे उसके कानों में कोई कहता- “झलकारी तुझे भी सैनिक बनना है | तुझे देश सेवा करनी है | तुझे अंग्रेजों को अपनी धरती से भगाना है |”[१]

झलकारी को रानी ने जो जिम्मेदारियाँ सौंपी थी उसे पूरा करने में वह जी-जान से जुटी थी | उसे रानी ने झाँसी की लुगाइगन की फौज की कमांड़र बना दिया था | महिलाओं की इस फौज की कमांड़र दलित समाज की एक महिला को बनाना उस समाज के लिए प्रेरणा की बात थी | उसके साथ कोरी, काछी, चमार, बखोर, कड़ेरे, कुर्मी, खटीक, पासी आदि बहादुर जातियों की महिलाएँ झाँसी की रक्षा के लिए सजग हो तरह-तरह के हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेने लगी थीं | उनके भीतर भी बलिदान देने की भावना थी और मर-मिटने का जज्बा भी था | अंजली टोरिया एवं शहरवाले महल के ठीक सामने राजकीय पुस्तकालय के पीछे झलकारी अभ्यास के

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.63

लिए जाती थी।

एक दिन ऐसा भी आया जब रणभेरी बज उठी। झलकारी युद्ध क्षेत्र में उतरने को लालायित थी। 18 मई, 1857 को मेरठ छावणी में भारतीय सैनिकों ने विद्रोह की शुरूआत की थी उसकी चिनगारी झाँसी में भी पहुँची। ऐसे समय पर पूरन कोरी और भाऊ बख्सी ने विद्रोह का संचालन किया। इस समय झलकारी बाई भी अपने पति के साथ अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए तत्पर हो उठी। झाँसी में विद्रोह भड़क उठा। युद्ध का कहीं अंत नहीं था। महल के भीतर-बाहर सभी जगह जंग छिड़ी थी। उत्तरी बुर्ज से झलकारी और पूरन अपने मोर्चे पर ड़टे भीषण आग दुश्मनों पर उगल रहे थे। रानी उन दोनों के उत्साह को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। पूरन को शाबाशी दी, और झलकारी की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली - "झलकारी तुमने बड़ी मेहनत की, बड़ी बहादुरी से पूरन का साथ दिया।"[१]

इसी बीच अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी ने छिपकर हमला किया। कुछ उन्नाव बुर्ज की दीवार के पास तिरछे आते दिखाई दिए। झलकारी ने सभी जाति की स्त्रियों को इकट्ठा किया और बोला कि - "अब गोरा भीतरैं आउन चात। हमाई दीवाल से भीतरै जैसे। हमाई इज्जत मट्टी में मिलजै। आज बताउनैं कि बुन्देलन की जनी परान दै के झाँसी के रच्छा कर है। हुपक हाँथन लै लो, सूद मिल लौ, अपनी लठियाँ निकाल लौ। कउन जैसे दुश्मन की मुंड़ी फोर दौ, खरिहान सौं बिछा दो एक गोरा लौट कै न जा पाउ न ऊपरें आन पाउनें।"[२] झलकारी की जोशीली वाणी ने स्त्रियों के रक्त को खौला दिया। उसके एक-एक शब्द तीर की तरह उनके हृदय में चुभ गए। फिर क्या था ? जिसके पास बंदूकें थी, उन्होंने ओट लेकर निशाना बाँधा। बाकी ने ईंट-पत्थरों का प्रयोग किया। देखते ही देखते अंग्रेजी सेना की तरफ धड़ाधड़ ईंट-पत्थरों तथा गोलियों की बौछार शुरू हो गयी। झलकारी ओट लेती हुई आगे-पीछे बराबर जा रही थी। भांड़ेरी गेट से लेकर उन्नाव गेट तक युद्ध का संचालन स्वयं झलकारी बाई कर रही थी। उसने तोपखाने को भी सँभाल रखा था। तभी पूरन कोरी अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गया। झलकारी ने देखा कि जमीन पर रक्त में डूबा उसका पति का शव पड़ा था। भारतीय नारी

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.92
2. वही - पृष्ठ क्र.94

का पति ही सर्वस्व होता है | ऐसे बिकट समय पर उसने कहा था- झाँसी के लाने मोय से पैले तुमने परान दे दय | भाव तन्द्रा भंग होते ही अपने पति के चरणों को स्पर्श कर तेजी से उछलकर घोड़े पर सवार कुछ ही दूरी पर चल रहे युद्ध में अंग्रेज सेना पर घायल सिंहनी की भाँति टूट पड़ी | उसे अपने पति के युद्ध में मारे जाने का दुख नहीं था, अपितु झाँसी की सुरक्षा की चिंता थी | चारों ओर आग की लपटें थी | झाँसी की फौज दुश्मन पर भारी पड़ रही थी | स्त्रियों ने चूड़ियाँ तोड़कर हथियार सँभाल लिए थे | यह सीख उन्हें झलकारी ने दी थी | उनके सामने एक ही उद्देश्य ही था और वह था दुश्मन को मार गिराना | वे पीठ दिखाकर मरना नहीं चाहती थी | लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होने की उनमें ललक थी | जुनून था उनके भीतर | वहीं जुनून उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर रहा था |

दूसरी तरफ झलकारी को चिन्ता थी तो रानी के मान-सम्मान की | उसकी निगाह में झाँसी और रानी में कोई फर्क न था | सबकी राय बनी कि रानी को झाँसी से निकल जाना चाहिए | उत्तर दिशा के दरवाजे से होकर रानी अपने निकटतम वफादार साथियों के साथ निकल गयी | झलकारी के सामने अब एक ही रास्ता था | जैसे भी हो गोरों का ध्यान रानी से हटाया जाए | जनरल हयूरोज कैंप में ही थे | गोरे सैनिक बाहर पहरे पर ही थे | वहाँ पहुँचकर उसने घोड़े की लगाम खींची | गोरे सैनिक ने हड़बड़ाहट में पूछा कि टुम कौन हाय ? झलकारी ने उत्तर दिया था, रानी | पुन: पूछा था उसी सैनिक ने, कौन रानी ? झलकारी वैसे ही स्वर बोली थी, झाँसी की रानी महारानो लक्ष्मीबाई | तभी झलकारी ने आदेश देने जैसे स्वर में कहा कि हम तुम्हारें जंडैल को इधर इसी बखत मिलना माँगता | जनरल हयूरोज और स्टुअर्ट धोखे में आ गए | लेकिन दुल्हाजू ने झलकारी को देख लिया था | वह वहीं दुल्हाजू था जिसने ओरछा फाटक खोलकर अंग्रेजी सेना को भीतर आने का अवसर दिया था | झलकारी ने उसकी आँखों में आँखे गड़ा दी थी | दुल्हाजू की आँखों में कहीं शर्म हया न थी | झाँसी के इतिहास में वह पुन: खालनायक बन उपस्थित हुआ था | बिना एक पल गँवाए उसने हयूरोज से कहा था, सरकार यह रानी नहीं है | हयूरोज ने सुना तो आश्चर्य से भर उठा | फिर कौन हाय ? वैसे ही स्वर में बोला था कि झलकारी कोरिन सरकार | फिर उसने कहा था कि सरकार, इसे मैने रानी के पास कई बार देखा था | दुल्हाजू जैसे गद्दार को

छावणी में देख झलकारी का खून खौल उठा | उसकी ओर बढ़ते हुए वह गरज उठी कि अरे पापी तैं ठाकुर होके याई का करौ | तैं पैदा होतई मर कौ नई गयौ | रानी का नमक खाकर भी गद्दारी की | तभी ह्यूरोज ने क्रोध में कहा कि टुम रानी नहीं हाय, टुम झलकारी हाय | हम टुमको गोली मार देगा | सुनकर तड़प उठी थी झलकारी | निर्भयता से वह फिर गरजी थी, मार देय गोली, मोखौं मौत से ड़र नई लगै | ह्यूरोज को उसकी वीरता पर आश्चर्य हुआ | ह्यूरोज ने स्टुअर्ट को कहा था कि अगर हिंदुस्टान की हर एक लड़कियाँ भी इस लड़की की तरह दिवानी हो गई, टो हम सबको यह देश छोड़ भागना पड़ेगा |

ह्यूरोज झलकारी की वीरता से प्रसन्न हुआ और सैनिकों को छोड़ देने का आदेश दिया | झलकारी वापस बस्ती में आई तो किसी को विश्वास नहीं हुआ कि अंग्रेजों के बीच छावणी से वह जिंदा वापस भी लौट सकती है | झलकारी को जीवित बचकर आने की कोई खुशी न थी | दुख था तो केवल झाँसी अंग्रेजों के प्रभुत्व में चली गयी थी | इतिहास के इस मोड़ से उसकी जीवनधारा बिल्कुल ही बदल गयी थी | उसने फिर से बिखरे हुए लोग-लुगाइन की सेना बनाई | झाँसी को अंग्रेजी सेना से आजाद कराना उसका उद्देश्य था |

### ❖ निष्कर्ष :

इस तरह से 'मुक्तिपर्व' में दलित चेतना को उजागर करने का प्रयास किया है | पूरे शहर में आजादी मिलने की चर्चा थी | नवाबसाहब, जमींदार, जागिरदार, दलित सब स्वतंत्र हो गए थे | पर उच्चवर्गीय दलितों को स्वातंत्र्य देना नहीं चाहते थे | वे दलितों को गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं | परंपरा से दलित सवर्णों का अन्याय, अत्याचार सहते आए थे लेकिन अब देश आजाद हो गया है | बंसी नवाबसाहब की हवेली पर गुलाम था | देश आजाद होने से बंसी नवाबसाहब की गुलामी ठुकरा देता है | बंसी ने गुलामी की जंजीरें कैसे एक झटके में तोड़ डाली थी | बरस-दर-बरस बंसी तथा उसकी जाति के लोग गुलामी भोगते आए थे | आजादी के बाद दलितों की अस्मिता और पहचान उभरने लगी थी | सवर्णों के लिए गुलाम देश ही अच्छा था | वे गुलामी की फौज बनाए रखना चाहते थे | लेकिन देश आजाद होने से कोई किसी का गुलाम नहीं

था और कोई किसी का मालिक | दलितों में अब स्वाभिमान का बोध हो रहा है | दलितों में जैसे-जैसे गुलामी का एहसास होता है, वैसे-वैसे वे अपनी गुलामी छोड़ रहे हैं | उनके भीतर चेतना का सूरज उगने लगा है | वे शिक्षा का मोल समझने लगे हैं एवं शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे हैं |

बंसी के घर में बेटे के जन्म से खुशी का माहौल था | पंड़ित का काम था जन्म लेनेवाले बच्चे का नामकरण संस्कार करना | आज पहली बार पंड़ित दलित बस्ती से निराश लौटा था | उसके ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगा था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका दबदबा टूट गया था | धर्म की बिसात उलट गई थी | इसलिए की आज एक पंड़ित बाजी हार गया था और दलित जीत गया था | बंसी ने पंड़ित को घर से बाहर निकाला था | बंसी ने बच्चे का नाम स्वयं रखा था सुनीत | बंसी ने सीधे रूढ़ि-परंपराओं को तिलांजलि दी थी | जब सुनीत ने स्कूल जाना शुरू किया तब उसके भीतर प्रौढ़ता उछाल मारने लगी थी | समाज के यथार्थ को उसने बहुत जल्द जान लिया था | सुनीत और बंसी को प्याऊवाले ने नलकी से पानी पिलाने से सुनीत नाराज होता है | वह उसके प्रति विद्रोह करता है | दलितों को अपनी ताकत का एहसास हो गया था | दलितों में विद्रोह और सुधार की प्रक्रिया साथ-साथ चल रही थी | डॉ.अम्बेड़कर जी ने दलितों में नए जीवन का संचार किया था और उनके सपनों को साकार करने का प्रयास किया जा रहा था |

आजादी के बाद दलितों का वजूद दहकने लगा था | वे शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे हैं | अध्यापक पाण्ड़े सुनीत दलित होने से उपहास करता है | वह जाति का नाम लेकर उसे जलील करता है | भारतीय शिक्षकों के मनपटल से जाति का संस्कार नहीं निकल सका है | जब तक आदर्श शिक्षकों का निर्माण नहीं होगा तब तक भारत का भवितव्य भी संदेहजनक है | लेकिन सुनीत मास्टर का जवाब अपने तरीके से देना चाहता है | वह शिक्षा, विवेक एवं बुद्धि के बल पर उसका जवाब देना चाहता है | इसलिए वह कठोर मेहनत करता है | अंततः सुनीत की मेहनत रंग लाती है | वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी में आता है | वह रिसर्च ट्रेनिंग पूरा करके जाति का सर ऊँचा करना चाहता है, उसके मान-सम्मान को अब तक आघात लगा था, उसका विरोध करना चाहता है | जीवन की लड़ाइयाँ लड़ने के लिए शिक्षा सबसे

ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है | वह उस शस्त्र के माध्यम से समाज में क्रांति करना चाहता है |

'वीरांगना झलकारी बाई' स्वातंत्रता सेनानियों की श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी है | नैमिशराय जी ने नेतृत्वकुशल दलित नारी एवं दलित समाज की यथार्थता को स्पष्ट किया है | भारतीय समाज में नारी का शारीरिक एवं मानसिक शोषण चारों ओर से दिखाई देता है | मछरिया जात से भंगी थी | उसने नारायण शास्त्री के साथ अन्तर्जातीय विवाह किया था | यह सीधे-सीधे ब्राह्मण समाज को चुनौती थी | झाँसी के राजा ने उन्हें देश से निकालने का आदेश दिया था | लेकिन मछरिया में चेतना जागृत हो गयी थी वह राजा का विरोध करती है | मछरिया दरबार में दो टूक बेबाक बात कहती है | मल-मूत्र उठानेवाली किसी औरत ने पहली बार राजा की आँखों में आँखें ड़ालकर बात की थी | मछरिया ने सभी के अस्तित्व को एक बारगी झटका दे दिया था |

नैमिशराय जी ने नेतृत्वकुशल दलित नारी के रूप में झलकारी को प्रस्तुत किया है | वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी और झाँसी की रक्षा के लिए निस्वार्थ भाव से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | वह भोजला गाँव के एक साधारण कोरी परिवार में पैदा हो गयी थी | लेकिन स्वातंत्र संग्राम में उसने अहं भूमिका निभाई | देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान ने उसने इतिहास में खास जगह बनाई है | परंतु चश्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों और पत्रकारों ने दलित समाज की उस वीरांगना की खबर नहीं ली थी | लेकिन दलित समाज, हिंदी साहित्य जगत एवं भारतीय समाज उसे सदैव याद करेगा, इसमें संदेह नहीं है |